DEPARTMENT of POLITICAL SCIENCE
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR.

BY- DR. A. K. Yadav
(ASSTT. Prof. G.P.T.T)

B.A. Part-II (HON'S), Paper-IV

Date-23-07-20

(Comparative Government and Politics)

Lecture-No-19

तुलनात्मक राजनीति के आधुनिक उपागम —

तुलनात्मक राजनीति के आधुनिक उपागम परम्परावादी उपागमों की अपेक्षा अधिक वैज्ञानिक एवं क्रमबद्ध है। आधुनिक उपागमों के प्रयोग से तुलनात्मक राजनीति के विषय क्षेत्र को क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित रूप में प्रयुक्त करने में सहायता मिलती है। इन उपागमों से विश्लेषण के तथ्यों के चयन का आधार तथा उनकी संगति का मापदण्ड मिलता है। इनसे विश्लेषण और तुलना की दृष्टि महत्वपूर्ण प्रश्नों, समस्याओं तथा तथ्यों के मध्य तारतम्य स्थापित करने में भी सहायता मिलती है। तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन से सम्बन्धित आधुनिक उपागमों में कतिपय प्रमुख उपागम इस प्रकार है —

1. राजनीतिक व्यवस्था विश्लेषण उपागम (Political System Analysis)
2. संरचनात्मक प्रकार्यात्मक उपागम (Structural Functional Analysis)
3. राजनीतिक व्यवस्था उपागम (Political Development Approach)
4. राजनीतिक आधुनिकीकरण उपागम (political modernization Approach)
5. मार्क्सवादी - लेनिनवादी उपागम Marxist- Leninist Framework
6. राजनीतिक संस्कृति उपागम (Political culture Approach)

By- DR. A. K. Yadav
(Asstt. Prof. G.P.T.T)
(Pol. SC)

— Continue

Scanned with CamScanner

DEPARTMENT of POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR.
B.A. Part-II (HON'S), Paper-IV

By. DR. A.K. Yadav
(Associate Prof. D.B.C.)

Date-23-07-20

Lecture-No-20

1 – राजनीतिक व्यवस्था विश्लेषण उपागम →
(Political System analysis)

राजनीतिक व्यवस्था विश्लेषण सिद्धांत आधुनिक तुलनात्मक राजनीति की वैज्ञानिकता, व्यापकता और प्रौढ़ता की खोज का अप्रतिम उदाहरण है। तुलनात्मक राजनीति में व्यवस्था सिद्धांत की सार्थकता इस बात में है कि यह राजनीतिक जीवन की व्यापकता और गहराई को समझने के लिए परम्परागत तुलनात्मक राजनीति के संकीर्ण दायरे से निकलकर विज्ञानों की खोजों से प्राप्त निष्कर्षों को भी औजारों के रूप में इस्तेमाल करता है।

राजनीतिक व्यवस्था क्या है? सबसे पहले हमें व्यवस्था का अर्थ समझना चाहिए। यह शब्द भौतिक विज्ञानों से लिया गया है। भौतिक विज्ञानों के अन्तर्गत 'व्यवस्था' का अर्थ सुपरिभाषित अन्तर क्रियाओं के समूह से है जिसकी सीमाएँ निश्चित की जा सके। शाब्दिक परिभाषा है कि व्यवस्था का अर्थ है– "जटिल सम्बन्धित वस्तुओं का समग्र समूह, विधि संगठन, पद्धति के नियम तथा वर्गीकरण का सिद्धांत।" इन अर्थों में महत्वपूर्ण शब्द हैं– सम्बन्धित, संगठित, और संगठन। अर्थात एक व्यवस्था संगठित होनी चाहिए जिसका उसमें संगठन हो, उसके अंग सम्बद्ध हों। यदि किसी भी स्थान पर हमें संगठन मिलता है अथवा जहाँ से संगठित होने के गुण पाये जाते हैं और उसके सभी अंग एक दूसरे से सम्बद्ध हैं तो वहाँ 'व्यवस्था' विद्यमान है। व्यवस्था में तीन गुण पाये जाते हैं –

(1) व्यापकता –

व्यापकता का अर्थ है– व्यवस्था के अन्तर्गत हम सभी परस्पर क्रियाओं को शामिल करते हैं। दूसरे शब्दों में, हम व्यवस्था के अन्तर्गत न केवल उन अंगों को शामिल करते हैं जो विधि पर आधारित है, विधायिका, कार्यपालिका, आदि वरन् समस्त संरचनाओं को उनके राजनीतिक रूप में शामिल करते हैं।– जैसे, जाति, धर्म, परिवार आदि।

(2) अन्योन्याश्रय –

अन्योन्याश्रय का अर्थ है कि जब व्यवस्था के एक अंग के गुणों में परिवर्तन आता है तो उसका प्रभाव अन्य अंगों पर भी स्वतः पड़ता है। उदाहरण के लिए, मानव शरीर एक व्यवस्था है। यदि-

P.T.O →

Scanned with CamScanner

शरीर के किसी एक भाग में पीड़ा होती है तो उसका प्रभाव सम्पूर्ण शरीर पर पड़ता है।

③ सीमाएँ –

सीमाओं से हमारा तात्पर्य है कि प्रत्येक व्यवस्था किसी एक बिन्दु से प्रारम्भ होती है एवं किसी एक निश्चित स्थान पर उसका अन्त होती है। दूसरे शब्दों में ऐसा बिन्दु जहाँ पर अन्य व्यवस्थाओं की परिधि समाप्त होती है और राजनीतिक व्यवस्था की परिधि प्रारम्भ होती है, उसे हम राजनीतिक व्यवस्था की सीमा कहते हैं।

रार्बट डहल के अनुसार – " राजनीतिक व्यवस्था मानव सम्बन्धों की वह स्थायी संरूप है जिसके अन्तर्गत, शक्ति, नियम और सत्ता महत्वपूर्ण मात्रा में अन्तर्ग्रस्त हो।"

डेविड ईस्टन के शब्दों में – " राजनीतिक व्यवस्था में तीन संघटक है – प्रथम – राजनीतिक व्यवस्था नीतियों के माध्यम से मूल्यों का आवंटन है, द्वितीय इसका आवंटन प्राधिकारिक होती है। तीसरा, इसका प्राधिकारिक आवंटन समाज पर बाध्य रूप से लागू होती है।"

आधुनिक विचारक लासवेल कहते हैं कि – " राजनीतिक क्रिया उस क्रिया उस क्रिया का नाम है जो शक्ति के परिप्रेक्ष्य से की गयी हो।"

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि राजनीतिक व्यवस्था राजनीतिक संस्थाओं तक ही सीमित नहीं है। अपितु जाति, समूह, चर्च, व्यावसायिक संगठन सभी में राजनीतिक व्यवस्था की कल्पना की जा सकती है। यदि संस्था के सदस्य सत्ता, शक्ति और नियम से सम्बन्धित हैं तो वस्तुतः प्रत्येक संगठन का एक राजनीतिक पहलू होता है। राजनीतिक व्यवस्था एक ऐसी उप-व्यवस्था है जिसके विभिन्न भागों में ऐसी सम्बन्ध व्यवस्था होती है कि व्यवस्था के किसी भी भाग में हुआ कोई भी परिवर्तन अन्य अन्तःक्रियाशील अंगों तथा सम्पूर्ण राजनीतिक व्यवस्था में भी अनुकूल परिवर्तन ला देता है।